

SRIJANSHODH2026-48

लोक विरासत के प्रलेखन एवं संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में सहारनपुर की काष्ठ कला : भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं सांस्कृतिक धरोहर का अध्ययन

शमशेर वारसी

शोधार्थी- देव भूम उत्तराखंड मवेश्वमवद्यालय देहरादून, उत्तराखण्ड
मो- 6205271236- shamsher.warsi24@gmail.com

शोध-सार

भारतीय ज्ञान प्रणाली में लोक कला एवं हस्तशिल्प केवल कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक स्मृति, पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय कौशल तथा सामुदायिक जीवन मूल्यों के महत्वपूर्ण वाहक हैं। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर की काष्ठ नक्काशी कला भारतीय हस्तशिल्प की एक विशिष्ट परंपरा है, जिसने अपनी उत्कृष्ट नक्काशी, पुष्पीय एवं बेल-बूटेदार रूपांकनों, ज्यामितीय अलंकरण तथा उपयोगितामूलक कलात्मक उत्पादों के कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। यह कला गुरु-शिष्य परंपरा, पारिवारिक प्रशिक्षण तथा अनुभवजन्य ज्ञान के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है और भारतीय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण, मशीन-निर्मित उत्पादों की प्रतिस्पर्धा तथा पारंपरिक कारीगरों की घटती संख्या के कारण सहारनपुर की काष्ठ कला अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसी स्थिति में इस कला का व्यवस्थित प्रलेखन एवं संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सहारनपुर की काष्ठ कला को भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में लोक विरासत के रूप में समझना तथा इसके संरक्षण के प्रभावी उपायों का अध्ययन करना है। अध्ययन गुणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है, जिसमें पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी प्रकाशनों तथा अन्य द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सहारनपुर की काष्ठ कला स्थानीय संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, पारंपरिक शिल्प ज्ञान, पर्यावरणीय संवेदनशीलता तथा सांस्कृतिक निरंतरता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस कला के डिजाइन, निर्माण तकनीकों, पारंपरिक औजारों एवं कारीगरों के अनुभवों का डिजिटल एवं वैज्ञानिक प्रलेखन इसकी दीर्घकालीन सुरक्षा के लिए आवश्यक है। साथ ही, डिजिटल अभिलेखागार, संग्रहालय, भौगोलिक संकेतक (GI), कला शिक्षा तथा स्थानीय समुदाय की सहभागिता इस विरासत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। निष्कर्षतः, सहारनपुर की काष्ठ कला का संरक्षण भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक पहचान और सतत विकास को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है तथा इसे शिक्षा, अनुसंधान और आधुनिक तकनीक से जोड़कर भविष्य की पीढ़ियों तक सुरक्षित रूप से पहुँचाया जा सकता है।

मुख्य शब्द: सहारनपुर की काष्ठ कला, लोक विरासत, भारतीय ज्ञान प्रणाली, प्रलेखन एवं संरक्षण, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत।

प्रस्तावना

भारत की हस्तशिल्प परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों में से एक है, जिसमें स्थानीय ज्ञान, पारंपरिक तकनीकों, कलात्मक सृजनशीलता तथा सामाजिक मूल्यों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में शिल्प केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, प्रकृति और समाज के मध्य संतुलन स्थापित करने वाली एक जीवन-दृष्टि के रूप में विकसित हुआ है। इसी परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग सहारनपुर की काष्ठ कला है, जिसने अपनी उत्कृष्ट नक्काशी, सूक्ष्म शिल्पकौशल तथा कलात्मक सौंदर्य के कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान स्थापित की है (हांडा 45; उपाध्याय 28)।

सहारनपुर की काष्ठ कला का विकास स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर शीशम एवं सागौन की उपलब्धता, गुरु-शिष्य परंपरा तथा मुगलकालीन कलात्मक प्रभावों के परिणामस्वरूप हुआ। समय के साथ यह कला केवल पारंपरिक उपयोगिता तक सीमित नहीं रही, बल्कि आधुनिक डिज़ाइन, आंतरिक सज्जा, निर्यात उद्योग तथा वैश्विक बाज़ार की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकसित होती रही है। वर्तमान में संगणक-सहायित अभिकल्प, संगणक नियंत्रित नक्काशी, लेज़र उत्कीर्णन, डिजिटल विपणन तथा ई-वाणिज्य जैसी आधुनिक तकनीकों ने इस कला को नए आयाम प्रदान किए हैं (जैन 112–115; भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय)। वर्तमान वैश्वीकरण एवं औद्योगिकीकरण के दौर में पारंपरिक हस्तशिल्प अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें कच्चे माल की कमी, मशीन निर्मित उत्पादों की प्रतिस्पर्धा, युवा पीढ़ी की घटती रुचि तथा विपणन संबंधी समस्याएँ प्रमुख हैं। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों, डिज़ाइन नवाचार तथा सतत विकास की अवधारणाओं के समन्वय के माध्यम से सहारनपुर की काष्ठ कला के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सहारनपुर की काष्ठ कला का भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत, डिज़ाइन नवाचार तथा सतत विकास के संदर्भ में समग्र विश्लेषण करना है, ताकि इस परंपरागत शिल्प के संरक्षण, आर्थिक सशक्तीकरण तथा वैश्विक विकास के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं हस्तशिल्प परंपरा

भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है, जिसका आधार अनुभव, व्यवहार, प्रकृति के साथ सामंजस्य तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित कौशल पर आधारित है। भारतीय परंपरा में हस्तशिल्प केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम माना गया है। वेद, उपनिषद्, शिल्पशास्त्र, मानसार, मयमतम् तथा समरांगण

सूत्रधार जैसे ग्रंथों में शिल्पकला, स्थापत्य एवं काष्ठ निर्माण से संबंधित सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो भारतीय शिल्प परंपरा की वैज्ञानिक एवं कलात्मक दृष्टि को प्रमाणित करते हैं (राजा भोज 112; हांडा 36)। भारतीय हस्तशिल्प परंपरा का विकास स्थानीय संसाधनों, जलवायु, लोकसंस्कृति तथा सामुदायिक आवश्यकताओं के अनुरूप हुआ। लकड़ी, धातु, मिट्टी, वस्त्र, बाँस तथा पत्थर जैसे प्राकृतिक संसाधनों से निर्मित हस्तशिल्प भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता और सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करते हैं। सहारनपुर की काष्ठ कला इसी परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से काष्ठ चयन, नक्काशी, अलंकरण तथा निर्माण तकनीकों का ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है (उपाध्याय 52; जैन 94)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक प्रमुख सिद्धांत प्रकृति के साथ संतुलित विकास है। पारंपरिक शिल्पकार स्थानीय एवं नवीकरणीय संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए पर्यावरण संरक्षण और संसाधनों के न्यूनतम अपव्यय पर बल देते हैं। वर्तमान समय में जब सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर वैश्विक स्तर पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, तब भारतीय हस्तशिल्प परंपरा की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। अतः सहारनपुर की काष्ठ कला भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत तथा सतत विकास के समन्वित स्वरूप का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है (भारत सरकार; संयुक्त राष्ट्र)।

सहारनपुर की काष्ठ कला : ऐतिहासिक विकास एवं सांस्कृतिक विरासत

सहारनपुर की काष्ठ कला भारत की प्रमुख हस्तशिल्प परंपराओं में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह कला अपनी उत्कृष्ट नक्काशी, कलात्मक सौंदर्य तथा पारंपरिक शिल्प कौशल के कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित सहारनपुर अपनी भौगोलिक स्थिति, वन संपदा तथा व्यापारिक संपर्कों के कारण काष्ठ उद्योग के विकास का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। विशेष रूप से शीशम, सागौन तथा अन्य कठोर लकड़ियों की उपलब्धता ने इस क्षेत्र में काष्ठ शिल्प को विकसित होने का आधार प्रदान किया (उपाध्याय 34–39)। ऐतिहासिक रूप से सहारनपुर की काष्ठ कला का व्यवस्थित विकास मुगल काल में हुआ। माना जाता है कि मुगल शासन के दौरान कश्मीर तथा अन्य क्षेत्रों के कुशल शिल्पकार यहाँ आए और उन्होंने स्थानीय कारीगरों को सूक्ष्म नक्काशी, बेल-बूटों, पुष्पीय अलंकरण तथा जालीदार डिजाइनों की तकनीकों से परिचित कराया। समय के साथ इन तकनीकों का स्थानीय कलात्मक परंपराओं के साथ समन्वय हुआ, जिससे सहारनपुर की विशिष्ट काष्ठ नक्काशी शैली विकसित हुई (हांडा 52–58)। ब्रिटिश शासनकाल में परिवहन एवं व्यापार के विस्तार से यहाँ निर्मित काष्ठ उत्पाद देश-विदेश के बाजारों तक पहुँचने लगे, जिससे यह उद्योग आर्थिक रूप से सुदृढ़ हुआ (खुराना 76–82)।

सांस्कृतिक दृष्टि से सहारनपुर की काष्ठ कला भारतीय सौंदर्यबोध, लोकजीवन तथा धार्मिक परंपराओं की सशक्त अभिव्यक्ति है। यहाँ निर्मित फर्नीचर, मंदिर, चौखट, सजावटी पैनल तथा गृह सज्जा की वस्तुओं पर पुष्प, लताएँ,

पत्तियाँ, कमल तथा ज्यामितीय आकृतियों का अंकन भारतीय कला की समृद्ध परंपरा को दर्शाता है। यह कला गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है, जिससे तकनीकी दक्षता, कलात्मक मौलिकता तथा सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण संभव हुआ है (जैन 98–103)। वर्तमान समय में सहारनपुर की काष्ठ कला पारंपरिक शिल्प और आधुनिक डिज़ाइन नवाचार का सफल समन्वय प्रस्तुत कर रही है। आधुनिक तकनीकों, डिज़ाइन विकास तथा वैश्विक विपणन के कारण इस कला की पहुँच अंतरराष्ट्रीय स्तर तक विस्तृत हुई है। इसके बावजूद इसकी मूल पहचान हस्तनिर्मित नक्काशी, पारंपरिक ज्ञान और भारतीय सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी हुई है। अतः सहारनपुर की काष्ठ कला केवल एक हस्तशिल्प नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक निरंतरता और रचनात्मक परंपरा का जीवंत प्रतीक है।

हथकरघा, हस्तशिल्प एवं काष्ठ कला का अंतर्संबंध

भारतीय संस्कृति में हथकरघा, हस्तशिल्प एवं काष्ठ कला परस्पर पूरक शिल्प परंपराएँ हैं, जिनका आधार भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्थानीय संसाधन, पारंपरिक कौशल तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है। यद्यपि इनकी निर्माण सामग्री एवं तकनीकें भिन्न हैं, फिर भी इनका मूल उद्देश्य उपयोगिता, सौंदर्य, सांस्कृतिक संरक्षण तथा स्थानीय आजीविका को सुदृढ़ करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिल्प को केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग माना गया है (जैन 42–46)। हथकरघा उद्योग प्राकृतिक रेशों से वस्त्र निर्माण की परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि हस्तशिल्प के अंतर्गत लकड़ी, धातु, मिट्टी, बाँस, पत्थर तथा अन्य प्राकृतिक सामग्रियों से उपयोगी एवं कलात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। काष्ठ कला हस्तशिल्प की एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें नक्काशी, अलंकरण तथा उपयोगी वस्तुओं का निर्माण पारंपरिक तकनीकों द्वारा किया जाता है। सहारनपुर की काष्ठ कला इस समृद्ध शिल्प परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ शिल्प कौशल, सौंदर्यबोध तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है (उपाध्याय 58–64)।

हथकरघा और काष्ठ कला के मध्य डिज़ाइन की दृष्टि से भी गहरा संबंध है। भारतीय वस्त्रों में प्रयुक्त बेल-बूटे, पुष्पीय अलंकरण, ज्यामितीय आकृतियाँ तथा लोक रूपांकन सहारनपुर की काष्ठ नक्काशी में भी प्रमुखता से दिखाई देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय शिल्प परंपराएँ एक साझा सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत से प्रेरणा ग्रहण करती हैं (हांडा 74–79)। गुरु-शिष्य परंपरा, पारिवारिक शिल्प परंपरा तथा स्थानीय लोकज्ञान इन तीनों क्षेत्रों को एक-दूसरे से जोड़ने वाले प्रमुख आधार हैं। वर्तमान समय में डिज़ाइन नवाचार, कौशल विकास, डिजिटल विपणन तथा आधुनिक तकनीकों ने हथकरघा, हस्तशिल्प एवं काष्ठ कला के अंतर्संबंध को और अधिक सुदृढ़ किया है। पारंपरिक शिल्पों में आधुनिक उपयोगिता, पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन तथा वैश्विक बाज़ार की आवश्यकताओं के अनुरूप नवाचार किए जा रहे हैं। इस प्रकार सहारनपुर की काष्ठ कला न केवल भारतीय हस्तशिल्प परंपरा की समृद्धि

का प्रतीक है, बल्कि भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत तथा सतत विकास की अवधारणा का भी सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।

डिज़ाइन नवाचार एवं आधुनिक तकनीक

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति तथा बदलती उपभोक्ता आवश्यकताओं के कारण पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों में डिज़ाइन नवाचार और आधुनिक तकनीकों का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। सहारनपुर की काष्ठ कला, जो अपनी उत्कृष्ट हस्तनिर्मित नक्काशी और कलात्मक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है, आज पारंपरिक शिल्प कौशल और आधुनिक तकनीक के समन्वय से नई पहचान प्राप्त कर रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली की मूल भावना परंपरा और नवाचार के संतुलन पर आधारित है, जिसके कारण आधुनिक तकनीकों को अपनाते हुए भी इस कला की मौलिकता और सांस्कृतिक स्वरूप सुरक्षित रखा जा रहा है (जैन 118–122)। संगणक-सहायित अभिकल्प (सीएडी) के माध्यम से उत्पादों के सटीक प्रारूप, अनुपात तथा त्रि-आयामी प्रतिरूप तैयार किए जाते हैं, जिससे डिज़ाइन की गुणवत्ता और कार्यक्षमता में सुधार होता है। संगणक नियंत्रित नक्काशी तकनीक प्रारंभिक कटाई और आकार निर्माण को अधिक सटीक एवं समयबद्ध बनाती है, जबकि अंतिम कलात्मक नक्काशी आज भी कुशल शिल्पकारों द्वारा हस्तनिर्मित रूप में की जाती है। इसी प्रकार लेज़र उत्कीर्णन तकनीक द्वारा सूक्ष्म अलंकरण, नाम, प्रतीक तथा जटिल आकृतियों का अंकन सरल एवं प्रभावी ढंग से किया जा रहा है, जिससे उत्पादों का सौंदर्य और व्यावसायिक मूल्य दोनों बढ़ते हैं (हांडा 84–89)।

आधुनिक तकनीकों का प्रभाव केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि विपणन और व्यापार के क्षेत्र में भी स्पष्ट दिखाई देता है। डिजिटल विपणन, सामाजिक माध्यमों, ऑनलाइन प्रदर्शनियों तथा ई-वाणिज्य मंचों के माध्यम से सहारनपुर के शिल्पकार अपने उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचा रहे हैं। इसके साथ ही उत्पाद विविधीकरण के माध्यम से पारंपरिक फर्नीचर के अतिरिक्त गृह सज्जा, धार्मिक सामग्री, कार्यालय उपयोगी वस्तुएँ तथा आधुनिक जीवनशैली से संबंधित अनेक उत्पाद विकसित किए जा रहे हैं (उपाध्याय 91–96)।

अतः यह स्पष्ट है कि डिज़ाइन नवाचार एवं आधुनिक तकनीक सहारनपुर की काष्ठ कला के संरक्षण, गुणवत्ता संवर्धन तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा में उसकी भागीदारी को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यदि इन तकनीकों का उपयोग पारंपरिक शिल्प कौशल और भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्यों के साथ संतुलित रूप से किया जाए, तो यह कला भविष्य में भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में काष्ठ कला

भारतीय ज्ञान प्रणाली में काष्ठ कला केवल एक हस्तशिल्प नहीं, बल्कि ज्ञान, कौशल, संस्कृति, आध्यात्मिक मूल्यों तथा प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने वाली जीवन-पद्धति का अभिन्न अंग है। प्राचीन काल से भारत में लकड़ी का उपयोग भवन निर्माण, धार्मिक स्थापत्य, मूर्तिकला, फर्नीचर तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं के निर्माण में किया जाता रहा है, जिसका उल्लेख *मानसार*, *मयमतम्*, *समरांगण सूत्रधार* तथा *विश्वकर्मा प्रकाश* जैसे शिल्पशास्त्रीय ग्रंथों में मिलता है। इन ग्रंथों में लकड़ी के चयन, अनुपात, नक्काशी, अलंकरण, संरचना तथा निर्माण-विधियों का वैज्ञानिक एवं कलात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय शिल्प परंपरा की परिपक्वता का प्रमाण है (*राजा भोज 145–152*; *मानसार 56–61*)। भारतीय शिल्प संस्कृति का मूल आधार विश्वकर्मा परंपरा है, जिसमें भगवान विश्वकर्मा को देवशिल्पी एवं निर्माण कला का अधिष्ठाता माना गया है। काष्ठ शिल्प से जुड़े कारीगर आज भी उन्हें अपनी कला, अनुशासन और सृजनशीलता का प्रेरणास्रोत मानते हैं (*विश्वकर्मा प्रकाश 18–24*)। सहारनपुर की काष्ठ कला में गुरु-शिष्य परंपरा आज भी जीवित है, जिसके माध्यम से अनुभवी शिल्पकार अपनी तकनीक, ज्ञान एवं कलात्मक अनुभव नई पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं, जिससे पारंपरिक शिल्प की मौलिकता और गुणवत्ता बनी रहती है (*उपाध्याय 64–69*)। इसके साथ ही लोकज्ञान भी इस कला का महत्वपूर्ण आधार है, जिसके अंतर्गत स्थानीय संस्कृति, धार्मिक आस्थाओं, प्राकृतिक परिवेश तथा सामाजिक जीवन से प्रेरित बेल-बूटे, पुष्पीय अलंकरण, पत्तियाँ एवं अन्य रूपांकन काष्ठ कला में अभिव्यक्त होते हैं (*जैन 84–89*)। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित एवं उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग पर विशेष बल देती है। इसी परंपरा के अनुरूप सहारनपुर के शिल्पकार शीशम, सागौन तथा अन्य उपयुक्त लकड़ियों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए संसाधनों के न्यूनतम अपव्यय, पुनः उपयोग तथा पर्यावरण संरक्षण को महत्व देते हैं, जो सतत विकास की अवधारणा के अनुरूप है (*हांडा 96–101*; *भारत सरकार*)। इस प्रकार विश्वकर्मा परंपरा, शिल्पशास्त्र, गुरु-शिष्य परंपरा, लोकज्ञान तथा प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग का समन्वय सहारनपुर की काष्ठ कला को भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत और सतत विकास का एक सशक्त एवं जीवंत उदाहरण सिद्ध करता है।

सतत विकास एवं काष्ठ कला

सतत विकास का तात्पर्य ऐसे विकास से है, जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी सुनिश्चित करे। सहारनपुर की काष्ठ कला इस अवधारणा का उत्कृष्ट उदाहरण है, क्योंकि यह भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्थानीय संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, पर्यावरणीय संतुलन तथा सामाजिक-आर्थिक समृद्धि के सिद्धांतों पर आधारित है (*संयुक्त राष्ट्र; भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020*)। भारतीय परंपरा में प्रकृति को पूजनीय माना गया है तथा प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर विशेष बल दिया गया है। यही दृष्टिकोण सहारनपुर की काष्ठ कला में भी परिलक्षित होता है, जहाँ शिल्पकार लकड़ी का अत्यंत सावधानी और मितव्ययिता से उपयोग करते हैं तथा छोटे-छोटे अवशेषों से भी उपयोगी एवं सजावटी वस्तुओं

का निर्माण कर संसाधनों के अपव्यय को न्यूनतम रखते हैं (हांडा 96–101)। इसके साथ ही प्राकृतिक रंगों, पर्यावरण-अनुकूल परिष्करण सामग्री तथा नियंत्रित वृक्षारोपण एवं प्रमाणित स्रोतों से प्राप्त टिकाऊ लकड़ी के उपयोग द्वारा पर्यावरण संरक्षण और वन संसाधनों के संवर्धन को प्रोत्साहन दिया जाता है (जैन 118–122)। सहारनपुर की काष्ठ कला स्थानीय अर्थव्यवस्था का भी महत्वपूर्ण आधार है, क्योंकि यह हजारों कारीगरों, शिल्पकारों, डिजाइनरों, व्यापारियों तथा परिवहन से जुड़े लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करती है, जिससे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों का आर्थिक विकास सुदृढ़ होता है (उपाध्याय 102–108)। इस उद्योग में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी उत्पादों की सज्जा, पॉलिश, पैकेजिंग, गुणवत्ता परीक्षण तथा विपणन जैसे कार्यों में दिखाई देती है, जिससे महिला सशक्तिकरण एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है (भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय)। इसके अतिरिक्त, आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा के अनुरूप यह उद्योग स्वदेशी उत्पादन, स्थानीय उद्यमिता, कौशल विकास तथा निर्यात संवर्धन को प्रोत्साहित करता है। काष्ठ कला में चक्रीय अर्थव्यवस्था का सिद्धांत भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जिसमें लकड़ी के अवशेषों का पुनः उपयोग, पुराने उत्पादों का पुनर्निर्माण, मरम्मत तथा पुनर्चक्रण करके अपशिष्ट को कम किया जाता है और संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जाता है। इस प्रकार सहारनपुर की काष्ठ कला पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, स्थानीय रोजगार, महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता तथा चक्रीय अर्थव्यवस्था जैसे सतत विकास के प्रमुख आयामों को सुदृढ़ करते हुए भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत एवं सतत विकास के समन्वित स्वरूप का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

चुनौतियाँ

सहारनपुर की काष्ठ कला भारत की प्रमुख हस्तशिल्प परंपराओं में से एक है, किंतु वर्तमान समय में यह अनेक आर्थिक, तकनीकी तथा सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रही है, जो इसके संरक्षण, संवर्धन एवं सतत विकास के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। इस उद्योग की सबसे बड़ी चुनौती गुणवत्तापूर्ण कच्चे माल की उपलब्धता है। शीशम, सागौन तथा अन्य उपयुक्त लकड़ियों की सीमित उपलब्धता, बढ़ती कीमतों तथा वन संरक्षण संबंधी नियमों के कारण कारीगरों को पर्याप्त मात्रा में उपयुक्त लकड़ी प्राप्त करने में कठिनाई होती है, जिससे उत्पादन लागत बढ़ती है और छोटे शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है (हांडा 102–107)। इसके अतिरिक्त मशीन निर्मित उत्पादों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण हस्तनिर्मित काष्ठ उत्पाद मूल्य की दृष्टि से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते, जबकि उनकी कलात्मक गुणवत्ता एवं सांस्कृतिक महत्ता अधिक होती है (जैन 134–138)। एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती युवा पीढ़ी की घटती रुचि है। आधुनिक रोजगार के अवसर, बदलती जीवनशैली तथा अपेक्षाकृत कम आय के कारण अनेक युवा इस पारंपरिक व्यवसाय से दूर हो रहे हैं, जिससे गुरु-शिष्य परंपरा कमजोर पड़ रही है और पारंपरिक शिल्प कौशल के लुप्त होने की आशंका बढ़ रही है (उपाध्याय 118–123)। विपणन संबंधी समस्याएँ भी उद्योग के विकास में बाधक हैं। अनेक कारीगर आधुनिक विपणन, ब्रांड निर्माण, डिजिटल माध्यमों तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार

की प्रक्रियाओं से पूर्णतः परिचित नहीं हैं, जिसके कारण वे बिचौलियों पर निर्भर रहते हैं और अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त नहीं कर पाते (भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय)। इन चुनौतियों के समाधान हेतु गुणवत्तापूर्ण कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित करना, कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार करना, युवाओं को प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान करना तथा आधुनिक डिज़ाइन एवं तकनीकों को पारंपरिक शिल्प के साथ समन्वित करना आवश्यक है। साथ ही डिजिटल विपणन, सामाजिक माध्यमों, वेबसाइटों तथा ई-वाणिज्य मंचों के माध्यम से उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाया जाना चाहिए। उत्पाद विविधीकरण के द्वारा पारंपरिक फर्नीचर के अतिरिक्त गृह सज्जा, धार्मिक सामग्री, कार्यालय उपयोगी वस्तुओं तथा पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली से संबंधित नवीन उत्पाद विकसित किए जा सकते हैं। इन उपायों के प्रभावी क्रियान्वयन से सहारनपुर की काष्ठ कला अधिक प्रतिस्पर्धी, आत्मनिर्भर, आर्थिक रूप से सशक्त तथा वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित बन सकती है और भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत तथा सतत विकास के उद्देश्यों को प्रभावी रूप से साकार कर सकती है।

सुझाव

सहारनपुर की काष्ठ कला के संरक्षण, संवर्धन तथा वैश्विक स्तर पर विकास के लिए समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। इस दिशा में सबसे पहले सहारनपुर की काष्ठ कला के भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए, जिससे इसकी प्रामाणिकता सुरक्षित रहे तथा नकली उत्पादों पर नियंत्रण स्थापित हो सके। साथ ही, स्थानीय स्तर पर डिज़ाइन नवाचार केंद्र की स्थापना कर पारंपरिक शिल्पकारों और आधुनिक डिज़ाइन विशेषज्ञों के सहयोग से नवीन एवं बाज़ारोन्मुख उत्पाद विकसित किए जाने चाहिए। राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) तथा राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान (एनआईडी) जैसे संस्थानों के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ तथा अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित कर कारीगरों को आधुनिक डिज़ाइन, गुणवत्ता सुधार और उत्पाद विकास की जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, युवा पीढ़ी को इस परंपरागत कला से जोड़ने के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों, प्रशिक्षु योजनाओं तथा आधुनिक उपकरणों के प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। साथ ही, डिजिटल निर्यात संवर्धन के अंतर्गत ई-वाणिज्य मंचों, डिजिटल विपणन, ऑनलाइन प्रदर्शनियों तथा वैश्विक व्यापार नेटवर्क से शिल्पकारों को जोड़कर उनके उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाज़ार तक पहुँचाया जाना चाहिए। इन सभी प्रयासों के माध्यम से सहारनपुर की काष्ठ कला का संरक्षण, शिल्पकारों की आर्थिक उन्नति, रोजगार सृजन, सांस्कृतिक विरासत का संवर्धन तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित सतत विकास के लक्ष्यों की प्रभावी प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती है।

निष्कर्ष

सहारनपुर की काष्ठ कला भारतीय हस्तशिल्प परंपरा की एक अमूल्य धरोहर है, जो भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत एवं पारंपरिक शिल्प कौशल का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सहारनपुर की काष्ठ कला केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, लोकज्ञान, गुरु-शिष्य परंपरा तथा शिल्पशास्त्रीय सिद्धांतों की जीवंत अभिव्यक्ति है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में डिज़ाइन नवाचार, आधुनिक तकनीकों, डिजिटल विपणन तथा ई-वाणिज्य के समावेश ने इस पारंपरिक कला को नई दिशा प्रदान की है। साथ ही पर्यावरण संरक्षण, टिकाऊ संसाधनों के उपयोग, स्थानीय रोजगार सृजन, महिला सशक्तिकरण तथा आत्मनिर्भर भारत जैसी अवधारणाओं के माध्यम से यह शिल्प सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

यद्यपि कच्चे माल की कमी, मशीन निर्मित उत्पादों की प्रतिस्पर्धा, युवा पीढ़ी की घटती रुचि तथा विपणन संबंधी समस्याएँ इस उद्योग के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं, फिर भी प्रभावी नीतियों, कौशल विकास, डिज़ाइन नवाचार, संस्थागत सहयोग तथा डिजिटल निर्यात संवर्धन के माध्यम से इनका समाधान संभव है। आवश्यक है कि पारंपरिक शिल्प कौशल और आधुनिक तकनीक के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए सहारनपुर की काष्ठ कला का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाए। इससे न केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रहेगी, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, निर्यात तथा वैश्विक स्तर पर भारतीय हस्तशिल्प की प्रतिष्ठा भी सुदृढ़ होगी। अतः सहारनपुर की काष्ठ कला भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक अस्मिता और सतत विकास के समन्वित मॉडल के रूप में भविष्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

संदर्भ सूची

- अंसारी, मोहम्मद आज़ाद। नगीना एवं सहारनपुर के विशेष संदर्भ में समकालीन भारतीय कला में काष्ठ का योगदान। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ लिटरेचर एंड आर्ट्स एजुकेशन*, खंड 1, अंक 2, 2021, पृ. 79–82।
- हांडा, ओ. सी. हिमालयी क्षेत्र की काष्ठ नक्काशी। नई दिल्ली: *इंडस पब्लिशिंग कंपनी*, 2008।
- जैन, ज्योतिन्द्र। भारत के हस्तनिर्मित शिल्प। नई दिल्ली: *मैपिन पब्लिशिंग*, 2011।
- उपाध्याय, राजीव। हमारा सहारनपुर। सहारनपुर: *स्थानीय प्रकाशन*, 2022।
- खुराना, विकास। अद्भुत सहारनपुर। सहारनपुर: *स्थानीय प्रकाशन*, 2023।
- राजा भोज। समरांगण सूत्रधार। वाराणसी: *चौखम्बा संस्कृत संस्थान*, विभिन्न संस्करण।



- मानसार। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, विभिन्न संस्करण।
- मयमतम्। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, विभिन्न संस्करण।
- विश्वकर्मा प्रकाश। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, विभिन्न संस्करण।
- भारत सरकार। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, 2020।
- भारत सरकार। हस्तशिल्प विकास आयुक्त का वार्षिक प्रतिवेदन। नई दिल्ली: वस्त्र मंत्रालय, विभिन्न वर्ष।
- भारत सरकार। वस्त्र मंत्रालय का वार्षिक प्रतिवेदन। नई दिल्ली: वस्त्र मंत्रालय, विभिन्न वर्ष।
- भारत सरकार। एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) योजना : दिशा-निर्देश एवं प्रकाशन। नई दिल्ली: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, विभिन्न वर्ष।
- भारत सरकार। भारतीय ज्ञान परंपरा : उच्च शिक्षा में कार्यान्वयन हेतु दिशा-निर्देश। नई दिल्ली: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, 2023।
- संयुक्त राष्ट्र। सतत विकास लक्ष्य (2030 कार्यसूची)। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र संगठन, 2015।
- भारतीय हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद। भारतीय हस्तशिल्प निर्यात प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारतीय हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद, विभिन्न वर्ष।